INDIAN CHAMBER OF COMMERCE

THEME 2021-2022 Governance For Growth

Demystify Cotton Puzzle

Date & Time

January 20th, 2022
5 PM - 6 PM

Venue

Register for online ZOOM meet
bit.ly/icctextilemeet

Panelists:

Neeraj Jain

Joint Managing Director, Vardhman Textiles Limited

Atul Ganatra

President, Cotton Association of India

Dharmendra Goyal

Managing Director, Shreedhar Cotsyn Pvt Ltd

Unupom Kausik

Sr Vice President, Olam International Group

Register bit.ly/icctextilemeet

An Online Interactive Session on Country's Most Sensational Business Topic: Rising Cotton and Yarn Prices

Moderator:

Sanjay Jain

Chairman, ICC National Expert Committee on Textiles

For details, please write to foreigntrade@indianchamber.net
or Call on +919836359933 or +918420028800

इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा आयोजित 20.01.2022 को शाम 5:00 बजे डेमिस्टिफाई कॉटन वेबिनार

निम्नलिखित पैनलिस्ट उपस्थित थे:-

1 संजय जैन (संचालक)

2 धर्मेंद्र गोयल (सूती सूत निर्यातक)

3 उनुपम कौशिक (वरिष्ठ उपाध्यक्ष ओलम)

4 नीरज जैन (संयुक्त प्रबंध निदेशक वर्धमान समूह)

5 अतुल गनात्रा (अध्यक्ष सीएआई)

*पिछले 3 महीनों के दौरान कपास और धागे की कीमतों में असामान्य वृद्धि हुई है

*उत्पादन को बनाए रखने के लिए सबसे बड़े स्पिंडल और फैब्रिक में बड़ी क्षमता वाले उद्योग चल रहे हैं

*हालांकि, अब पॉलिएस्टर और विस्कोस फाइबर की ओर शिफ्ट होने की उम्मीद है

*अब कपास की खपत में कमी और सिंथेटिक फाइबर में वृद्धि की संभावनाएं हैं

*इसमें कोई संदेह नहीं है कि ICE कपास और धागे की कीमतों के संकेतक के रूप में है

*वैश्विक स्तर पर कपास बाजार में अधिक तेजी

*कपास उत्पादन में कमी और मांग में वृद्धि

*कपास की आपूर्ति अच्छी है लेकिन आसानी से उपलब्ध नहीं है

*चीन महंगाई को धोखा दे रहा है और डिप्रेशन को ग्लोबल प्लेटफॉर्म पर रख रहा है

*सभी वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि विशेष रूप से चीन के प्रभुत्व वाली वस्तुओं में

*नकारात्मक मार्जिन बनाने वाले जिनर्स जहां स्पिनर थोड़ा सकारात्मक मार्जिन बनाते हैं

*वास्तव में कपास और धागे की कीमतें असामान्य रूप से अधिक हैं और कपास वर्ष 2010-11 के परिदृश्य को दोहराने की संभावनाएं हैं।

*मौजूदा परिस्थितियों में खरीदारी में धीमी गति से चलना और स्टॉक को आमने-सामने रखना उचित है क्योंकि हम उत्पादन को रोक नहीं सकते हैं।

*किसानो ने करीब 150 लाख गांठ का कपास स्टॉक कर रखा है

*वास्तव में कपास का उत्पादन कम है लेकिन उस हद तक नहीं जितना कि बाजार में बोला जाता है।

*हालांकि, कपास का आयात लैंडिंग कीमतों पर निर्भर करता है लेकिन फिर भी सभी एजेंसियों (संघों) को कपास पर आयात शुल्क हटाने का अनुरोध करना चाहिए।

*हमारा मुख्य उद्देश्य अच्छी गुणवत्ता और बड़ी मात्रा में उत्पादन के लिए सक्षम बीज की नई तकनीकों को पेश करके कपास की उपज बढ़ाना होना चाहिए

*यह भी अनुमान लगाया गया है कि वर्तमान में लगभग 15 लाख गांठ आयात किए जाने की संभावना है, जबकि आयात शुल्क को हटाने पर यह 25-30 लाख गांठ के आंकड़े को छू सकता है।

Demystify Cotton Puzzle webinar held on 20.01.2022 at 5:00 pm conducted by Indian chamber of commerce

Following panelist were present :-

1 Sanjay Jain (moderator)

2 Dharmendra Goyal (cotton yarn exporter)

3 Unupam kaushik (senior Vice president Olam)

4 Neeraj Jain (joint managing director Vardhman Group)

5 Atul Ganatra (President CAI)

***During last 3 months there is abnormal hike in cotton and yarn prices.**

***Industries operating with largest spindles and huge capacity in fabric are running in order to sustain production.**

***However, now looking forward to shift towards polyester and viscose fiber.**

***Now there are possibilities in reduction of cotton consumption and increase in synthetic fiber.**

***No doubt ICE in an indicator for cotton and yarn prices.**

***Globally there is more bullishness in cotton market.**

***Reduction in kapas production and increase in demand.**

***Cotton well supplied but not easily available.**

***China cheating the inflation and keeping depression on global platform.**

***All commodities increasing in prices specially in china dominated items.**

***Ginners making negative margins where spinners making a bit positive margin.**

***Infact cotton and yarns prices are abnormally high and possibilities are there to repeat the scenario of 2010-11 cotton year.**

***Under the prevailing circumstances it is advisable to go slow in buying and keep stock hand to mouth as we can not stop production.**

***Farmers holding kapas of around 150 lakh bales.**

*Indeed cotton production is low but not to that extent as being spoken in market.

*Though, import of cotton depends up on landing prices but still all agencies (associations) should request for removal of import duties on cotton.

*Our main object should be to increase cotton yield by introducing new technologies of seed enabling to produce good qualities and in large quantity.

*It is also speculated that at present around 15 lakh bales are likely to be imported where as on removal of import duty it may touch the figure of 25-30 lakh bales.